विजयगुरुगळंत्रि कमल
विजयगुरुगळंत्रि कमल भजनॆ माडिरॊ ॥प|
सुजनकृत ज्ञानाध्वर ऋत्विजन पाडिरो ॥अ.प||
विज्ञानप्रद ज्ञातव्य सुज्ञानखणि अज्ञानोग्रतिमिरार्कनुद्विग्न मुनिमणि यज्ञमग्नाभिज्ञ श्रीसर्वज्ञ प्रियवाणि विघ्नकळॆदल्पज्ञर पालिप प्राज्ञा वरदानि ॥१
अंभोरुह संभवोद्भवंभोज शृंग शंभु सर्वोत्तमा शंकारंभ मातंग कंबुगदा अंबुजारि बिंब चिन्नांग बिंबक्रियाभावज्ञात गुंभांतरंग ॥२॥
विप्रजाति विपुळ ख्याति क्षिप्रफलदात सुप्रासादवाणि अमित प्रमतियति हित अप्रतीकावलंब श्रीश स्वापरोक्षित अप्रबुद्धपाल कारुण्याप्राकाशित ॥३॥
कीर्तितव्य काव्याचार्य स्फूर्तिदायक तीर्थक्षेत्राद्यटन शील सार्थकायक कार्थस्वरेत्यादि काष्ट कृष्णवर्त्मक पार्थमित्र स्तोत्ररति पुष्ट सायक ॥४॥
द्वंद्वातीत बंधुरात्म नंद तुंदिल संदर्शना देव पुनंति विगतविह्वल मंदात्मनागिरलेनिवर नंबलनुगाल मुंदॆ कुणिव तंदॆ वॆंकटेश विठल ॥५।